India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

# एक स्मरणीय जन्म दिवस

पूज्य गुरुदेव का ८५वाँ जन्मदिवस उत्सव २३ से २५ जुलाई २०११ को भारत में डायमंड जुबली पार्क तिरुपूर में आयोजित किया गया। यह प्रिय गुरुदेव के सान्निध्य में होने और उत्सव में भाग लेने का हर्षपूर्ण अवसर था। गुरुदेव २० जुलाई को तिरुपुर पहुँचे और जब उनकी कार ने उत्सव स्थल में प्रवेश किया, तब अभ्यासियों ने अपने प्रिय की एक झलक पाने के लिये शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा की और युवा अभ्यासियों ने उनका स्वागत करते हुये एक गीत गाया। गुरुदेव की कार रुक गयी, उन्होंने गीत सुना और उसके बाद वे अपनी कॉटेज में चले गये। 'उनकी उपस्थिति' से वातावरण में आये परिवर्तन को तुरन्त ही सबने महसूस किया।

गुरुदेव के उत्सव स्थल पर आगमन के समय तक सभी सुविधायें तैयार तथा उपलब्ध थी और केवल अंतिम सुधार बाकी थे। उनके वहाँ पहुँचते ही स्वंयसेवक जोश से भर उठे और सबने अपने–अपने पद संभाल लिये और सभी कार्यसम्बन्धी क्षेत्रों में सुचारु रुप से कार्य आरम्भ हो गया। गुरुदेव ने रुचि कैफे द्वारा संचालित जलपान–गृह का उद्घाटन किया और फिर वे परिसर के चारों ओर व्यवस्थाओं का निरीक्षण करने के लिये गये।

## विशाल स्तर पर तैयारियाँ

२ लाख वर्ग फीट का एक विशाल ध्यान कक्ष बनाया गया था, लगभग १०० स्वंयसेवकों ने इसे करीब १५०० किलोग्राम फूलों से सजाया। कुल मिलाकर लगभग ४०० स्वंयसेवक ध्यान कक्ष के विभिन्न क्षेत्रों जैसे, मंच की तैयारी, पानी आपूर्ति, सफाई, सजावट, ऑडियो–वीडियो, सुरक्षा, स्वर्ण पुस्तक आदि में कार्यरत थे। इतने बड़े स्तर पर संचालन, चरम सहमति और सहयोग केवल हमारे गुरुदेव के दिव्य निर्देशन में ही सम्भव है। गुरुदेव ने २२ जुलाई को सुबह के सत्संग के साथ ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया और उन्होंने उत्सव के सभी दिनों में सुबह का सत्संग कराया।

छाया–चित्र प्रदर्शन (फ़ोटो गॅलरी) सबके आकर्षण का केन्द्र थी। 'यूथ अवेयरनैस बूथ' (वाई ए बी) में उन विभिन्न गतिविधियों को

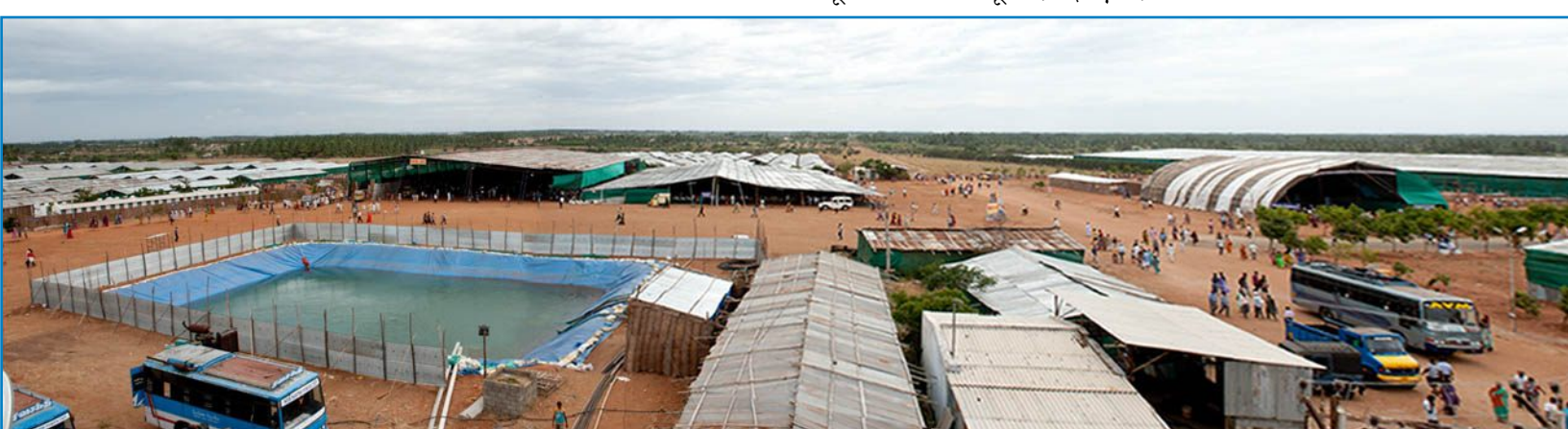

दर्शाया और बताया गया था जिससे सहज मार्ग के युवा अभ्यासी जुड़े हैं। दूसरा बड़ा आकर्षण था बच्चों का केन्द्र। एक विशेष विशाल तम्बू सभी उम्र के बच्चों के लिये लगाया गया था, जिसमें वे विभिन्न कला और शिल्प में सक्रिय रुप से व्यस्त थे। उत्सव के दौरान लगभग २००० बच्चों ने एक गीत को गाने का अभ्यास किया, जो विशेष रुप से मुम्बई में लिखा और रिकॉर्ड किया गया था और फिर गुरुदेव के देखने के लिये उसका सीधा प्रसारण किया गया। दुनिया के विभिन्न देशों के बच्चों को एक साथ एक आवाज़ में समवेत गाते हुये सुनना एक आश्चर्यजनक अनुभव था।

## अभ्यासियों की संख्या और उपलब्ध सुविधाओं में नया उच्चांक

अभ्यासियों का उत्सव में भाग लेना एक सुखद अवसर था। बच्चों सहित लगभग ४८ हजार अभ्यासी उत्सव स्थल पर उपस्थित थे। यह अब तक की सबसे अधिक संख्या है। अभ्यासियों के आवास के लिये लगभग २०० शिविर लगाये गए। इसके अतिरिक्त अभ्यासियों की सुविधा के लिये न्यूनतम मूल्य पर सीमित मात्रा में आराम डॉर्म भी उपलब्ध थे।

अभ्यासियों के इतने विशाल समूह के लिए विभिन्न विभागों को चलाने के लिए स्वयंसेवकों के प्रयासों का अनुमान लगाया जा सकता है। विभिन्न स्थानों से बसें उत्सव स्थल पर पहुँच रहीं थी जिसके कारण यातायात, आवास और पंजीकरण के कार्य में संलग्न स्वयंसेवकों के समूहों में समन्वय महत्वपूर्ण था। इस कार्य को कार्यकर्ताओं के समूहों ने एक साधारण प्रक्रिया का कारगर तरीके से पालन करते हुए सुचारू रूप से सम्पन्न किया। स्वयंसेवकों के सभी समूहों को खाना-पीना उपलब्ध कराने वाले एक चलते-फिरते समूह का सहयोग मिल रहा था जिन्होंने स्वयंसेवकों को जहाँ-जहाँ भी वे कार्य कर रहे थे रात-दिन समय पर खाना-पीना उपलब्ध कराया।

पुस्तकों की खरीदारी के लिए बडे पैमाने पर इंतज़ाम किया गया था। सभी भाषाओं की पुस्तकें और नए विमोचित हुये प्रकाशन भी खरीदारी के लिये उपलब्ध थे।

रसोईघर में १०० स्वयंसेवकों को एक पंक्ति में खड़े होकर चपाती बनाते हुये देखना एक उल्लेखनीय दृश्य था। रसोईघर से अभ्यासियों के लिये सुबह के भोजन और शाम के चाय नाश्ते का प्रबन्ध किया जाता था।

एक सुव्यवस्थित चिकित्सा केन्द्र – एम्बुलेंस और आपातकालीन सेवाओं के साथ पूर्णतया उपयोग के लिये उपलब्ध था। पीने के पानी की ज़रुरत को पूरा करने के लिये १ घंटे में १०,००० लीटर पानी साफ करने की क्षमता वाला एक बहुत बड़ा आर. ओ. संयंत्र लगाया गया था। स्वंयसेवकों का एक कारगर दल शौचालयों को साफ करने और उपयोग में लाने योग्य बनाने के कार्य में लगा हुआ था। ये सभी और दूसरे स्वास्थ्यकर पूर्व उपाय प्रमुख रसोईघर और जलपान गृह में भी अपनाये गये थे, परिणामत: चिकित्सा केन्द्र में बहुत कम मरीज देखे गये।

## एक नये अनुशासन का आरंभ

२३ जुलाई को सुबह के ध्यान के बाद उत्सव समिति के अध्यक्ष भाई हर्षवर्धन गुप्ता ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने तिरुपूर को उत्सव का स्थान चुनने के लिये गुरुदेव को धन्यवाद देते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने उत्सव की तैयारियों में लगे देश के सब भागों से आये स्वयं–सेवकों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। भाई गुप्ता ने इस तथ्य पर जोर दिया कि गुरुदेव ने सत्संग के दौरान प्राणाहुति के रूप में वो सब कुछ हमें दे दिया है जो उनके पास था, इसलिये हम अभ्यासियों को उन्हें उनकी कुटी में जाकर परेशान करने से अपने आपको रोकना चाहिये।

इस उत्सव के लिये, गुरुदेव के "प्रेम में अनुशासन" के नारे से संकेत लेते हुए, सभी अभ्यासियों को एक अपील भेजी गई थी कि गुरुदेव के आराम और उनके दिमाग पर पड़ने वाले दबाव से स्वतंत्रता की आवश्यकता का सम्मान किया जाये। अभ्यासियों का सहयोग अद्भुत रहा जिसके कारण गुरुदेव को अपना कार्य करने और सत्संगो के बीच में आराम करने का पर्याप्त समय मिला। ११:३० बजे भन्डारे के नारे "प्रेम में अनुशासन" पर कार्यक्रम हुआ और भाई चक्रपाणि ने पहले हिन्दी और बाद में तमिल में एक बहुत ही प्रेरित करने वाली वार्ता दी। उन्होंने इस बात की तुलना की कि जब एक जहाज कुछ समय के लिये समुद्र में होता है तो कुछ प्रकार की मछलियां उससे चिपक जाती हैं जिससे जहाज की गती कम हो जाती है तथा जहाज की सफाई के लिये उसे समय–समय पर गोदाम में ले जाना पड़ता है। ठीक इसी प्रकार से, हम अभ्यासी भी साल भर में अपने अन्दर भारीपन/गन्दगी इक्कठा कर लेते हैं तथा यह उत्सव वह समय है जब गुरुदेव अभ्यासियों की सफाई करके उन्हें उनके स्थानों पर वापस भेज देते हैं। २३ जुलाई की शाम को विभिन्न केन्द्रों के अभ्यासियों द्वारा कई तरह के भजन और नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

## जन्मदिन

२४ जुलाई की सुबह, गुरुदेव ध्यान कक्ष में आने से पहले, सरोवर देखने गये जो उत्सवस्थान के लिये पानी का मुख्य स्रोत है। उन्होंने यह देखकर कि सरोवर भरा हुआ था, मज़ाकिया लहज़े में कहा "क्या यह पानी काफ़ी है या हमें बरसात की ज़रूरत है?"। फिर गुरुदेव ध्यान कक्ष में दाखिल हुए जहाँ पर व्हाईलिन पर "हैप्पी बर्थ डे" की धुन बजाई जा रही थी तथा इसके बाद "हैप्पी बर्थ डे" के बोल सभी अभ्यासियों द्वारा गाये गये। उन्होंने देखा कि ध्यानकक्ष अभ्यासियों से खचाखच भरा हुआ था और फिर भी कुछ अभ्यासी बाहर खड़े थे। उन्होंने कहा कि "कक्ष सरोवर की तरह ही भरा हुआ है"। गुरुदेव ने इस भन्डारे के तीन दिनों के दौरान कुल २८ शादियां करवाई। २४ जुलाई को बहन रंजना मेहता और भाई गुरप्रीत ने आत्मविभोर करने वाले भजन गाये जिहोंने हर एक के ह्रदय को स्पर्श किया तथा बहुतों को रुलाया भी। गुरुदेव ने फिर एक वार्ता दी।

भाई पी. आर. कृष्णा ने २४ जुलाई की शाम का सत्संग कराया जिसके दौरान बादल छाये रहे और गड़गड़ाते रहे। जैसे ही सत्संग समाप्त हुआ तुरंत बरसात हुई। सत्संग के बाद, बहन जयन्ती कुमारेसन का वीणा वादन हुआ जिसे गुरुदेव ने अपने कुटीर से ही सीसीटीवी के माध्यम से देखा। यह एक बहुत अच्छा कार्यक्रम था जिसने दर्शकों को दो घन्टों तक लीन रखा।

जैसे कि समझा जा सकता है कि गुरुदेव के लिये प्रत्येक अभ्यासी से व्यक्तिगत रूप से मिलना कठिन था तब भी, गुरुदेव ने प्रयास

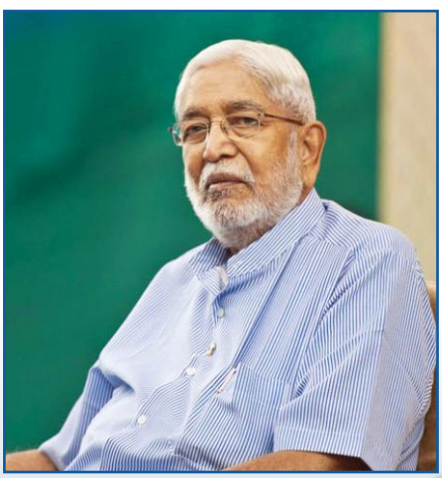

करके विभिन्न अभ्यासी समूहों के साथ कई सभायें की। वे अफ्रीका, नेपाल, श्रीलंका, यू एस ए, यूरोप आदि जगहों के अभ्यासियों से मिले। एक सभा में उन्होंने कहा कि यह अभ्यासियों के लिये महत्वपूर्ण है कि पहले वे काम करें, अपने ऊपर और दूसरों पर भी, तथा उसके बाद सभायें करें। उन्होंने कहा कि सिर्फ इसके बाद ही सभाओं का कुछ मतलब है तथा उन्होंने समूहों को काम के लिये उत्साहित किया और फिर अगली बार मिलने को कहा।

## एक उपयुक्त समापन

२५ जुलाई को भन्डारे का आख़िरी सत्संग पुज्य गुरुदेव द्वारा कराया गया तथा इसके बाद बहन निहारिका द्वारा गुरुदेव की प्रशंसा में भक्तिपूर्ण कवितायें प्रस्तुत की गयी। ये हृदय से बोली गयी थीं जिसके कारण ध्यान कक्ष में उपस्थित हर एक अभ्यासी ने इस प्रस्तुति से प्रसारित प्रेम को महसूस किया। उत्सव समाप्ति का भाषण, भाई पी. आर. कृष्णा ने उत्सव के नारे "प्रेम में अनुशासन" को स्पर्श करते हुए दिया। उन्होंने टिप्पणी की कि भन्डारे के दौरान हम अभ्यासियों ने इस नारे का अनुशरण किया है और हम इस बात से खुश हो सकते हैं कि हमारे व्यवहार से गुरुदेव प्रसन्न हुए हैं। उन्होंने हमारे जीवन की समस्यायों को तीन मुख्य वर्गों में बांटा जैसे कि– पूर्वाग्रह करना, अपेक्षा रखना, और निर्णायक होना और कहा कि इन तीनों की वजह सिर्फ हमारा अहं है। उन्होंने गुरुदेव के बारे में बताते हुए कहा कि वो सिर्फ एक चीज़ थी जिसने गुरुदेव को आज की स्थिति में पहुंचाया और वो है–'आज्ञापालन'। इसी भाषण के साथ यह उत्सव समाप्त हुआ लेकिन इसकी ज़बर्दस्त अनुभूति हमारे हृदयों में सदैव बनी रहेगी।

## गुरुदेव की वार्ता से लिये गये अवतरण – २४ जुलाई

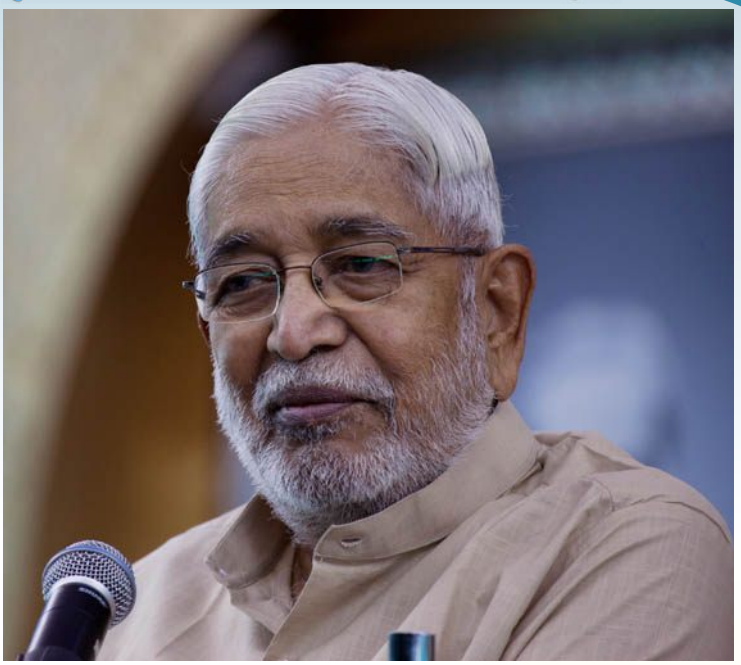

.... "उसने (गुरुप्रीत) अभी गाना गाया ... गुरु की कृपा से प्रत्येक क्षण एक नई सुबह है। क्या कम से कम हमारी हर सुबह नई सुबह होती है? या क्या हम हर सुबह शोक मना रहे होते हैं? मैं क्यों जाग कर उठ रहा हूँ? आज मैं क्या करने जा रहा हूँ? मैंने अभी तक कई वर्षों से चली आ रही समस्या का समाधान नहीं किया है, शायद कई जन्मों की समस्या का, कैसे आज की सुबह कुछ भिन्न होने वाली है? फिर से मुझे बैठना है, शोक मनाना है और ईश्वर को पुकारना है कि 'आपने क्यों मुझे यहाँ भेज दिया है?'

.... हममे से कौन यहाँ, सिवाय अपने को छोड़ कर, किसी दूसरे के लिये कुछ करता है? क्या हम अभी भी अपना घर साफ करके इसकी धूल सड़क पर नहीं फेंकते? क्या हम अभी भी अपने बच्चों को फुटपाथ पर टट्टी, पेशाब करने के लिये नहीं बैठाते? क्या अभी भी हम सड़क पर सिगरेट नहीं फेंकते, रद्दी कागज सड़क पर नहीं फेंकते, गली मे नहीं थूकते और फिर हरे–भरे पर्यावरण की इतनी ज्यादा बातें करते हैं? क्या हम पेड़ नहीं काट रहे हैं? क्या हम अपनी नदियों को प्रदूषित नहीं कर रहे हैं? आप प्राचीन वेदों को जानते हैं, वेदो के भाग हैं जोकि कहतें हैं कि एक अच्छे मनुष्य को पर्यावरण का ख़्याल रखना चाहिये, उसे पेड़ नहीं काटने चाहिये, उसे पेड़ों की पूजा करनी चाहिये। क्योंकि पेड़ों के बिना आक्सीजन नहीं होगी और वातावरण की सफाई नहीं होगी। पेड़ जलाने की लकड़ी के लिये नहीं हैं, पेड़ वातावरण को साफ करने के लिये हैं जिसे हम अपनी साँस द्वारा बाहर निकाली गई कार्बन डाई आक्साईड से प्रदूषित करते हैं। हम ही प्रदूषण फैलाने वाले हैं और फिर ऊपर से हम बड़ी बातें करते हैं कि मानव जीवन शिखर पर है। आप जानतें हैं कि मानव क्रमिक विकास का शिकार हो सकता है लेकिन शिखर पर नहीं है।

.... मैं यह कहना चाहता हूँ, इस बात की और आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि, जो एक महान जमीन होनी चाहिये, जहाँ पर गंगा बहती है, जिस देश मे गंगा बहती है, वह भूमि जहाँ पर वेद अवतरित हुए, आदि–आदि, वहाँ इन चीजों की आज की खराब स्थिति के लिये हममें से हर एक उत्तरदायी है। हम बहुत कुछ दावा करते हैं। लेकिन क्या हम अपनी तरफ से उन आदर्शों के अनुरूप, मनुष्य जीवन की आवश्यकताओं के लिये कुछ काम कर रहें हैं जिससे कि कम से कम उस परम्परा को जीवित रखा जा सके? करूणा, दया, प्रेम, बाँटना, दूसरों का शौषण न करना, सिर्फ अपने लिये काम ना करना बल्कि दूसरों के लिये काम करना। आध्यात्मिकता कहती है कि, अपने आप को भूल जाओ। जो आप दूसरों के लिये करते हैं, अंतत: वही आपके पास वापस आयेगा और अंतत: का मतलब अगला युग नहीं है। क्योंकि सभी पुराने विज्ञान, रहस्यवाद, तुम किसी का भी नाम लो, यही कहतें हैं कि आप जो भी सोचते हो, वह ब्रह्मांड मे घूमता है तथा आपके पास वापस आता है। तुम नफ़रत करो तो नफ़रत तुम्हारे पास वापस आती है, तुम प्यार करो तो प्यार वापस आता है, तुम दान करो तो दिया हुआ वापस आपके पास आता है। लेकिन आप क्या कर रहे हो– लेना, लेना, लेना।

.... एक कहावत है कि, एक पत्थर तो पत्थर है। आप इसे लात मार सकते हैं, आप इसे फेंक सकते हैं, आप जो चाहे इसके साथ कर सकते हैं। लेकिन इसे एक बार मंदिर मे रखने के बाद, आप इसके दास बन जाते हो। इस बात से सावधान रहो कि कहाँ आप अपना पत्थर रखते हो, कहाँ आप अपना धन रखते हो और कहाँ आप अपनी भक्ति को अर्पण करते हो। सावधान, क्योंकि आज का संसार ही बहुत खराब है, कल के संसार की हालत पाँच साल बाद क्या होगी? आपके बच्चे ५ वर्ष से बड़े हो गए हैं, आपके पौत्र ५ साल से बड़े हो गए हैं, बच्चे युवा बन चुके हैं, आप वृद्धावस्था से गुजर रहें हैं और आपके पास, आप जानते हैं, यह सत्य कहने का साहस नहीं है कि आज के इस संसार की यह स्थिति मैंने पैदा की है। मेरे पुत्र, कम से कम, तुम ऐसा मत करो। हम ऐसा नहीं कहते। इसलिये आप देखते हैं कि हममें से ज्यादा तर के लिये आध्यात्मिकता एक व्यर्थ की चीज़ है। हम एक छुट्टी के लिये आते हैं, हम संगीत का मज़ा लेते हैं, हम अच्छे खाने का मजा लेते हैं। हममें से कितने यहाँ सच्चे अभिलाषी हैं?

.... सत्य एक ऐसी औषधि है, यह कड़वी है और हम इसके ऊपर मीठी परत नहीं चढा सकते क्योंकि उसका कोई मतलब नहीं है। इसलिये कृपया, सबसे कटु सत्य के लिये तैयार रहें जो कि सिर्फ आपके स्वंय के अंदर से निकलेगा। जब आप अपनी शाम की सफ़ाई करते हैं तो क्या आप अपने आप को देख रहे होते हैं? जब आप रात की प्रार्थना करते हैं तो क्या आप सोचते हैं कि बाबूजी ने क्या कहा था, 'की गयी गलती को ना दौहराने के लिये दृढ संकल्प लो'। क्या हम यह कर रहें हैं? या हम सिर्फ,' हे नाथ, तू ही मनुष्य जीवन का मुख्य ध्येय है..' ऐसा बड़बड़ाते हैं? यह हँसने का विषय नहीं है, यद्यपि ऐसा लगता है, यह अत्यंत गंभीर विषय है।

आप जानते हैं, जब प्रकृति की शक्तियाँ जागृत होती हैं तो पशु, पक्षी एवं चिंटियाँ आदि सब जान जाते हैं, लेकिन हम मनुष्य नहीं जान पाते। हम भूकंप मापक यन्त्र पर भरोसा करते हैं, हम टेलिविज़न पर दिखाई जाने वाली उत्तेजक ख़बरों पर विश्वास करते हैं, जोकि ज़्यादातर गलत होती हैं। यहाँ (हृदय), यहाँ क्या है जिसे आप नहीं देख रहे हैं? क्या ये आपको कोई विनाश का संकेत देता है? हमेशा यहाँ देखो, आप जब कभी भी डर रहे हो या जब कभी भी रास्ता भटक रहे हो। बाबूजी महाराज ने कहा, 'इसका (मन का) विश्वास मत करो, यह केवल एक सोचने की चीज है जो आपको जानकारी दे सकती है लेकिन यह नहीं बता सकता कि क्या सही है और क्या गलत। जब भी आप दुविधा में हो तो अपने दिल की सुनो।' मैं आज आप सभी के लिये 'उनके' आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूँ।"

# New Publications

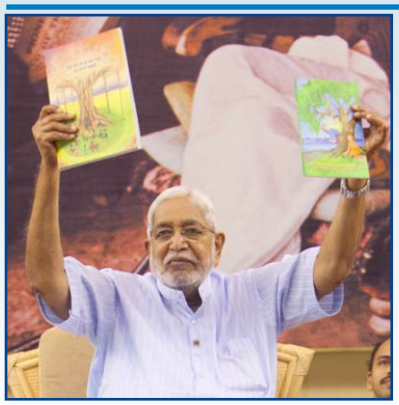

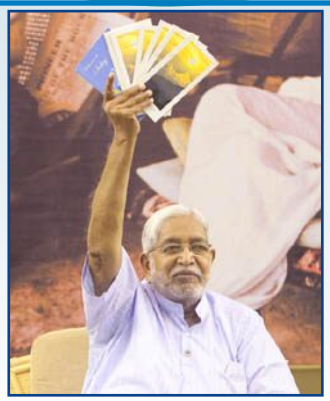
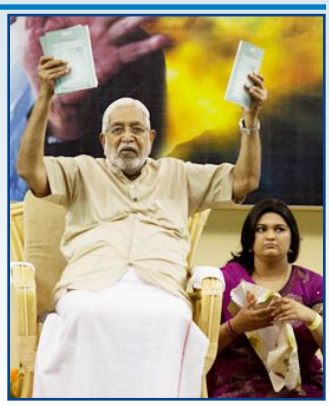

गुरूदेव ने कुछ किताबें और सी.डी. प्रकाशित कीं जिनमें कुछ का विवरण इस प्रकार है:–

### टेल्स ऑफ़ वंडर–१
तमिल, तेलगु, हिन्दी

### रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ भाग–१
हिन्दी

### आध्यात्मिकता क्यों
अंग्रेजी, हिन्दी, तेलगु, तमिल, गुजराती, कन्नड, मराठी, नेपाली, जरमन, इटेलियन, पुर्तगालीन, स्पैनिश

### यादों की गलियों में
दूसरी आवृती

### अंडरस्टैंडिंग स्पिरिचुएलिटि
(५ डी.वी.डी. का सेट)

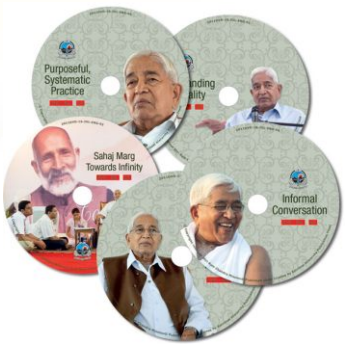


### प्रीफ़ेक्ट्स (प्रशिक्षक)
डी.वी.डी. सेट भाग–२(कॉर्पस के अंतर्गत नहीं)

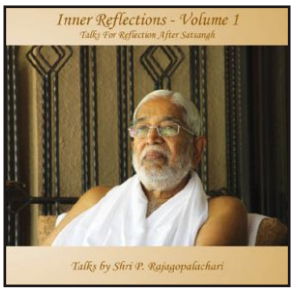


### इनर रिफ़्लेक्शन्स –भाग १
सत्संग के बाद चिन्तन के लिये वार्तायें

### गुरु और लक्ष्य
तमिल, तेलगु, कन्नड, मल्यालम, मराठी, गुजराती

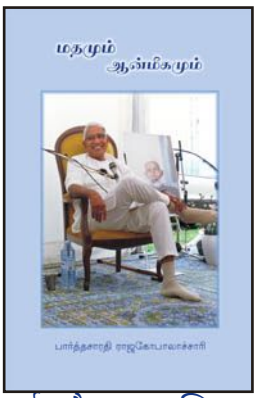


### धर्म और आध्यात्मिकता
तमिल

### युथ (युवा) भाग–१
इटैलियन

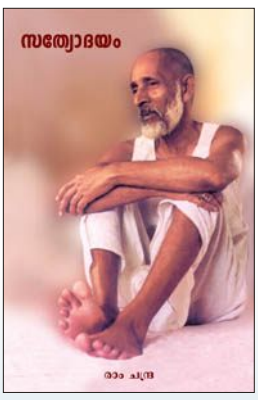


### सत्य का उदय
मल्यालम

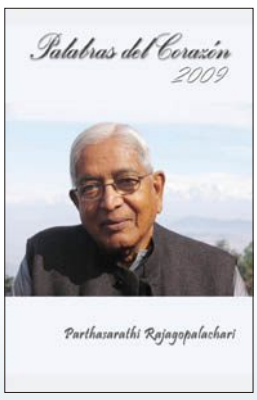


### दिल की आवाज़ २००९
स्पैनिश

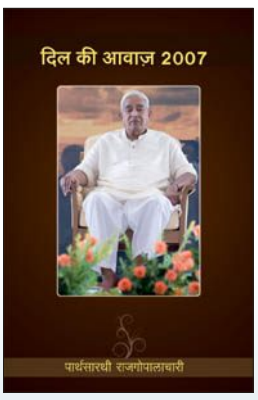


### दिल की आवाज़ २००७
हिन्दी

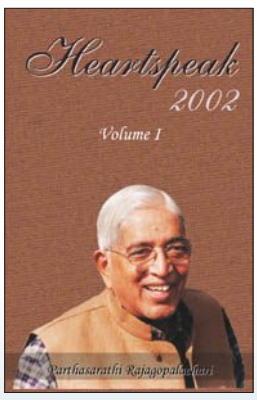


### दिल की आवाज़ २००२
भाग–१ अंग्रेजी

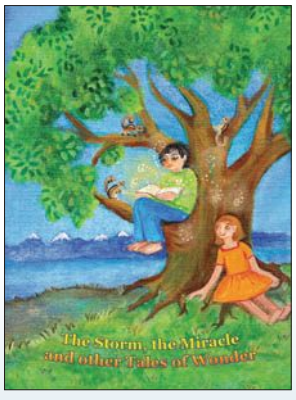


### टेल्स ऑफ़ वंडर–२
अंग्रेजी